© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

21वीं शताब्दी में गाँधीवाद की प्रासंगिकता

गजेन्द्र सिंह
राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

मोहनदास करमचंद गांधी को दुनिया कथनी–करनी में समानता, सत्यनिष्ठ, अहिंसा के पुजारी, सर्वधर्म समभाव, समानता आधारित समाज के समर्थक, सामाजिक, आर्थिक न्याय के प्रवक्ता, रचनात्मक कार्यों के प्रणेता के रूप में जानती है। गांधीजी के इन उसूल एवं सिद्धांतों को आज के समय अपनाये जाने की आवश्यकता है तभी हम इस धरती को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

मुख्य शब्द :– सत्य, अहिंसा, पर्यावरण, औद्योगिकीकरण, ट्रस्टीशिप रचनात्मक कार्यक्रम, साम्प्रदायिक सद्भाव, सर्वोदय

प्रस्तावना

गांधीजी ने जो जीवन जिया वही गांधीवाद है, क्योंकि गांधीजी कहते थे कि मेरे कर्म ही उपदेश है। गांधीजी की कथनी–करनी में अंतर नहीं था। सत्य उनकी सांसों में रंगा था, वो लाभ व लोभ के लिए भी सत्य को त्यागने के पक्ष में नहीं थे। सत्य के अलावा अहिंसा उनका दूसरा अश्त्र था। अहिंसा के तीन प्रकार उन्होंने बताये साथ ही अहिंसा को वीरो के अस्त्र के रूप में संज्ञा देते थे।

गांधी जी वस्तुओं के अत्यधिक संग्रह व उपभोग को सीमित करने के पक्षधर थे। वे मानते थे कि अत्यावश्यक वस्तुएं ही अपने पास रखनी चाहिये तथा उपभोग भी कम से कम होना चाहिये। गांधीजी कुटीर उद्योगों के समर्थक थे एवं बड़े उद्योगों को मानवता के हितैषी नहीं मानते थे।